International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197
Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 1112-1113

कबीर का मूल व्यक्तित्व एक अध्ययन

Suman
Ph.D. Student, OPJS University, Churu, Rajasthan, India

प्रस्तावना

कबीर का व्यक्तित्व बहुआयामी है, यह महत्वपूर्ण कारण है कि उनके व्यक्तित्व को लिखते समय लेखकों को विभिन्न पहलुओं से जूझना पड़ता है। लेखकों का एक वर्ग उन्हें संत मानता है और द्वारा करता है,'' कबीर स्वभाव से संत प्रकृति से उपदेशक और ठोक–पीट कर कवि हो गए।''[1] दूसरा वर्ग जिसमें प्रमुख हजारी प्रसाद द्विवेदी प्रमुख हैं, भक्त मानते हैं साथ ही शेष सभी पक्षों को उनके व्यक्तित्व की छाया बताते हैं। अब प्रत्येक शोधार्थी को यह प्रश्न उद्वेलित करता है कि कबीर का व्यक्तित्व कवि का है, भक्त का है या समाज सुधारक का है।'' कबीर हिन्दी साहित्य के महापंडित व्यक्तित्व हैं।''[2] यह सभी विद्वान एक मत से स्वीकरते हैं कबीर के जन्म के संबंध में अनेक किवंदतियों हैं, कुछ लोगों के अनुसार व रामानंद स्वामी के आशीर्वाद से काशी की एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से पैदा हुए थे। ब्राह्मणी लोक–लाज के भय से 'लहरतारा' नामक ताल के पास फैंक आयी थी। यहां नीरू और नीमा नामक दम्पति जो जाति से जुलाहा थी के बारे में एक विचार प्रस्तुत करना अनिवार्य है कि क्या कबीर वास्तव में इस दम्पति की संतान थे या यह कबीर बालरूप में उनको लहरतारा नामक ताल के पास मिला था। स्वयं कबीर कहते हैं–

''जाति जुलाहा नाम कबीरा
बनि–बनि फिरौ उदासी।''[3]

कबीर पंथियों का मानना है कि बालक कबीर के उत्पत्ति काशी में लहर तारा नामक तालाब में उत्पन्न मनोहर पुष्प के उपर बालक कबीर के रूप में हुई। कुछ विद्धान यह भी मत देते हैं कि कबीर जन्म से मुसलमान थे और युवावस्था में रामानंद के प्रभाव से उन्हें हिन्दू धर्म का ज्ञान हुआ। यह एक संयोग ही था, एक दिन कबीर पंचगंगा धार की सीढियों पर गिर पड़े। रामानंद उसी समय गंगा स्नान के लिए उतर रहे थे उनका पैर कबीर के शरीर पर पड़ गया और तत्काल ही उनके मुख से राम–राम शब्द आलोकित हो उठा। उसी राम को कबीर ने दीक्षा मंत्र मान लिया और रामानंद को अपना गुरू स्वीकार कर लिया। कबीर स्वयं स्वीकारते है –
''हम काशी में प्रकट भये हैं, रामानंद चेताये।''[4]
कबीर समकालीन परिस्थितियों सामाजिक द्वंद्व उजागर करती है। कबीर ने ताउम्र इस द्वंद्व को मिटाकर सत्संग को बढ़ावा दिया है। सत्संग भजन मात्र नहीं बल्कि सम्पूर्ण समर्पण का भाव है। समर्पण शब्द को लेकर और समाज को लेकर।
सामान्य रूप में प्रत्येक विद्वान इस बात का स्वीकारता है कि कबीर गृहस्थ थे। उनका भरा पूरा परिवार था। पत्नी का नाम लोई था। पुत्र कमाली थी और पुत्र कमाल था। कबीर पंथी लोग इस बात की व्याख्या अपने तरीके से करते है और कहते है कि कबीर अपने आप में बाल ब्रह्मचारी थे। जो कमाल थे वो कबीर के शिष्य थे और कमाली तथा लोई इनकी शिष्या थी। लोई शब्द प्रयोग कबीर ने कम्बल के लिए भी किया है। परन्तु स्वयं कबीर कुछ और कहते हैं और पत्नी लोई को पुकारते है।''

कहत कबीर सुनहुरे लोई हरि बिन राखन हार न कोई।''[5]
कबीर दास अनपढ थे। उनका दोहा तो सर्वप्रचलित है–
''मसि कागद छुयो नहीं, कलम गहि नहि हाथ।''[6]

उन्होंने स्वयं कोई ग्रंथ नहीं लिखा, उन्होंने तो कहा है और उसको उनके शिष्यों ने शब्द–बद्ध किया है। कबीर के जो कभी विचार थे उनमें राम नाम की महिमा का वर्णन है। एक ही ईश्वर को मानना, कर्म कांड की विरोध, मूर्ति पूजा, ईद का विरोध। यह सर्वविदित है कि 'बीजक' कबीर का महत्वपूर्ण शब्द संग्रह है, इसके तीन भाग है, 'शब्द' 'रमैनी' तथा 'साखी', इस भारत की कई भाषाओं के शब्दों का योग है, विद्वान इसमें 'खिचडी' कहते हैं। कुछ दूसरे विद्वान कबीर पर अपनी टिप्पणी देते है एच.एच. विल्सन के अनुसार कबीर नाम पर 8 ग्रंथ हैं विशप केस्ट गार्ड ने 64, तो रामदास गौड़ ने 72 पुस्तके बताई हैं। परन्तु बीजक इस सब मतो को नकार देती है।
''स्वभाविक रूप से कबीर का जीवन शांति प्रिय रहा है। वे अहिंसा–सत्य एवं सदाचार के प्रशंसक थे। उनकी सरल विनीत एवं साधु प्रवृति के कारण उनका समाज में हमेशा आदर रहा है, उनका पूरा जीवन काशी में गुजरा, लेकिन मरने के समय वे मगहर चले गए।''[7] शायद मृत्यु के समय वे दुखी हो गए थे और इसी दुख के कारण उनको काशी छोड़नी पड़ी।

''अब कुछ राम कवनी गति मोरी
जीले बनारस मति भई मोरी''[8]

यह सत्य है कि कबीर स्वभाव के शांत थे और संत प्रवृत्ति के थे। यह उनका स्वभाव था विचारों से वर्ण व्यवस्था साम्प्रदायिक भाषाई भेदभाव का साफ खंडन किया है। एक महान समाज सुधारक की यह मूल पहचान हो ती है कि वह अपने युग की विसंगतियों की पहचान करे उसके प्रत्येक पहलू का आंकलन करें। कबीर में यह सब योग्यता थी। समानता को लेकर वो कहते थे।
''साई के सब जीव हैं, कीरी कुंजर दोय''[9]
उन्होंनें सामाजिक विषमता पर बहुत कहा है। समाज को लताड़ा रूढियों का विरोध किया, सात्विकता का बखान किया, निरीह समाज को मार्ग चेताया। कबीर अनपढ़ थे लेकिन साहित्य की दृष्टि से उनका काव्य अपने आप मे मील पत्थर है। यह अलग है कि कई प्रतिमान सैद्धातिक रूप में खरे नहीं उतरते परन्तु संवेदना की दृष्टि से कबीर का काव्य किसी महाकवि से कम नहीं है। सामाजिक व्यंग्य की कविताएँ, उलटबांसी और प्रभावोत्पादकता की दृष्टि से सर्वोच्च हैं। हजारी प्रसाद द्विवेदी की दृष्टि के कारण इन्हें

वाणी का डिक्टेटर इसी लिए कहा होगा।

कबीर के व्यक्तित्व का एक पक्ष उनका संत होना है वे संत परम्परा में सामाद्धत हैं। सैद्धांतिक रूप से किसी संत में चार बाते अपेक्षित हैं। आध्यात्मिक मनोवृत्ति, सांसारिक विरक्ति निस्वार्थता और निर्भयता। कबीर की कविताओं में ऐसे बहुत सारे संकेत है जहाँ यह सब मिलता है। कबीर के व्यक्तित्व में निस्वार्थता का भी गुण भी देखने को मिलता है। समाज के हित के लिए घर फूँक मस्ती देखने को मिलती है। संतत्त्व उनके व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण गुण है। दूसरी और उनका भक्त तत्त्व भी महत्वपूर्ण है और भारत का 90 प्रतिशत समाज उनको भक्त मानता है उनको साहब मानता है। उनका बहुत बड़ा पंथ है और बहुत सारे अनुयायी है। कबीर जिस परम्परा में पले–बढ़े वहाँ उनमें रच बस गई। इसीलिए भक्ति के रूप कबीर की वाणियों स्वाभविक है। हजारी प्रसाद के शब्दों में, ''भक्तित्व की व्याख्या करते हुए उन्हें उन बाह्यचारों की व्याख्या करने की बजाय साफ करने का लक्ष्य लिया। यही बात समाज सुधारक एवं सामाजिक ऐक्य की विधात्री बन गई।''[10]

वस्तुत कबीर का व्यक्तित्व ने केवल बहु आयामी है बल्कि सम्पूर्ण आयाम प्रत्येक स्तर पर अपने चरम को छूते हैं। इसके बाद में यही कहना चाहूँगा कि उनके व्यक्तित्व में भक्त तत्व ही प्रमुख है। समाज सुधार तो भक्ति की पूर्णता का ही फल है। अस्तु, भक्त प्रवर कवि कबीर इसका निष्कर्ष है।

संदर्भ सूची

1. कबीर एक अध्ययन –117
2. कबीर वीकिपीडिया –1
3. कबीर –ग्रंथावली श्यामसुंदर दास –111
4. वही–70
5. वही–113
6. क्षितिज, एन.सी.आर.टी. –73
7. वीकिपीडिया–3
8. वही
9. कबीर, रमेश कुमार दैनिक ट्रिब्यून–1/5/93
10. कबीर, हजारी प्रसाद द्विवेदी–46